

घमंड का सिर नीचा-पंचतंत्र

एक गांव में उज्वलक नाम का बढई रहता था । वह बहुत गरीब था । गरीबी से तंग आकर वह गांव छोडकर दूसरे गांव के लिये चल पडा । रास्ते में घना जंगल पडता था । वहां उसने देखा कि एक ऊँटनी प्रसवपीडा से तडफडा रही है । ऊँटनी ने जब बच्चा दिया तो वह ऊँट के बच्चे और ऊँटनी को लेकर अपने घर आ गया । वहां घर के बाहर ऊँटनी को खूँटी से बांधकर वह उसके खाने के लिये पत्तों-भरी शाखायें काटने वन में गया । ऊँटनी ने हरी-हरी कोमल कौंपलें खाईं । बहुत दिन इसी तरह हरे-हरे पत्ते खाकर ऊँटनी स्वस्थ और पुष्ट हो गई । ऊँट का बच्चा भी बढकर जवान हो गया । बढई ने उसके गले में एक घंटा बांध दिया, जिससे वह कहीं खोया न जाय ।

दूर से ही उसकी आवाज सुनकर बढई उसे घर लिवा लाता था । ऊँटनी के दूध से बढई के बाल-बच्चे भी पलते थे । ऊँट भार ढोने के भी काम आने लगा ।

उस ऊँट-ऊँटनी से ही उसका व्यापार चलता था । यह देख उसने एक धनिक से कुछ रुपया उधार लिया और गुर्जर देश में जाकर वहां से एक और ऊँटनी ले आया । कुछ दिनों में उसके पास अनेक ऊँट-ऊँटनियां हो गईं । उनके लिये रखवाला भी रख लिया गया । बढई का व्यापार चमक उठा । घर में दुधकी नदियाँ बहने लगीं ।

शेष सब तो ठीक था----किन्तु जिस ऊँट के गले में घंटा बंधा था, वह बहुत गर्वित हो गया था । वह अपने को दूसरों से विशेष समझता था । सब ऊँट वन में पत्ते खाने को जाते तो वह सबको छोडकर अकेला ही जंगल में घूमा करता था ।

उसके घंटे की आवाज़ से शेर को यह पता लग जाता था कि ऊँट किधर है । सबने उसे मना किया कि वह गले से घंटा उतार दे, लेकिन वह नहीं माना ।

एक दिन जब सब ऊँट वन में पत्ते खाकर तालाब से पानी पीने के बाद गांव की ओर वापिस आ रहे थे, तब वह सब को छोडकर जंगल की सैर करने अकेला चल दिया । शेर ने भी घंटे

की आवाज सुनकर उसका पीछा किया । और जब वह पास आया तो उस पर झपट कर उसे मार दिया ।

सीख : घमंड का सिर नीचा ।

अनुवाद - कुलदीप धर

अभंग का भिर नीला-पंठउंउ

एक गांव में उल्लूक नाम का गड्ढा रहता था। वह बहुत गरीब था। गरीबी में उंग मुकर वह गांव छोड़कर दूसरे गांव के लिये चल पड़ा। रास्ते में अना खंगल पड़ता था। वहां उभने टोपा कि एक उंएनी भूमवपीरा में उरुदरा रकी है। उंएनी ने एक गड्ढा दिया है वह उंए के गड्ढे और उंएनी के लेकर अपने घर मु गया। वहां घर के गहर उंएनी के प्रेमी में गंधकर वह उभके पाने के लिये पड़े-रुगी मापाये काएने वन में गया। उंएनी ने रुगी-रुगी के भल केंपले पारें। बहुत दिन उभी उरु रुरे-रुरे पड़े पाकर उंएनी भूमू और पुष्ट हो गए। उंए का गड्ढा ही गड्ढकर खान हो गया। गड्ढा ने उभके गले में एक अंए गंध दिया, एभमें वह कहीं पिया न रख।

दूर में ही उभकी सुवाए भुनकर गड्ढा उभे घर लिव लाता था। उंएनी के दूध में गड्ढा के गाल-गड्ढे ही पलते थे। उंए घर में के ही काम मुने लगा।

उभ उंए-उंएनी में ही उभका वृषार चलता था। वह टोपा उभने एक पनिक में कुछ रुपया उणार लिया और गुल्हर टैम में रखकर वहां में एक और उंएनी ले गया। कुछ दिनों में उभके पाम मुनेक उंए-उंएनियं हो गए। उनके लिये रापखला ही राप लिया गया। गड्ढा का वृषार अभक उण। घर में दूधकी नदियां बहने लगीं।

मेध भगुं ठीक था----किन्तु एभ उंए के गले में अंए गंध था, वह बहुत गविउ हो गया था। वह अपने के दूसरे में विमेध

मभाउता था। मग उँए वन में पड़ुँ पावे के एउँ उँ वरु मग के
केरुकर मकेला की एंगल में प्रभा करता था।

उमके अँए की मुवाए मे मेर के वरु पता लग एता था कि उँए
किणर है। मगने उमे भना किया कि वरु गले मे अँए उतरा है,
लेकिन वरु नहीं भाना।

एक दिन एग मग उँए वन में पड़ुँ पाकर उलाह मे पानी पीने
के गारु गांव की उर वपिम मु रूँ से, उम वरु मग के केरुकर
एंगल की मेर करने मकेला एल दिया। मेर ने ही अँए की
मुवाए मुनकर उमका पीका किया। उर एग वरु पाम मुवा उँ
उम पर एपए कर उमे भान दिया।
भीष : अभंरु का भिर नीगा।

मनुवाए - कुलमीप एर